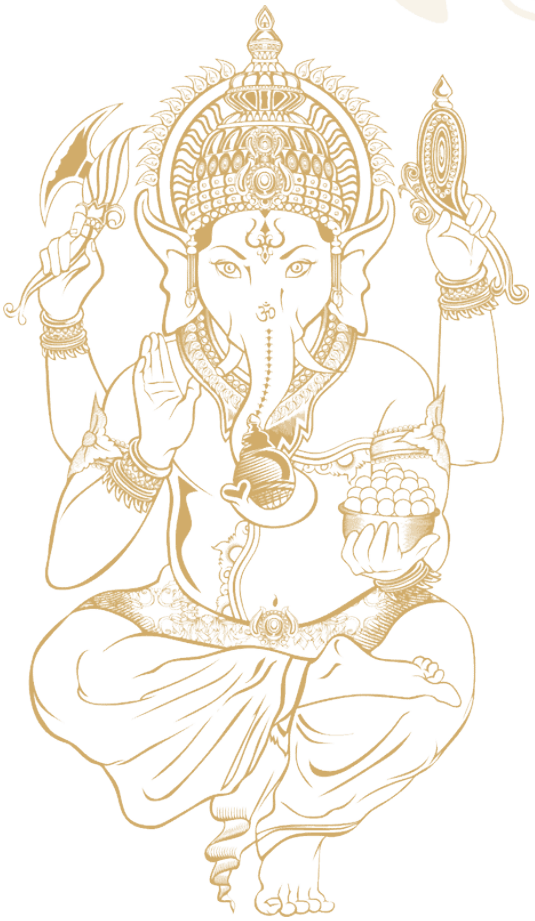

Baby

06 Apr 2026

08:02 PM

Kosi Kalan

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121938201**

तिथि 06/04/2026 **समय** 20:02:00 **वार** सोमवार **स्थान** Kosi Kalan **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:32
अक्षांश 27:48:00 उत्तर **रेखांश** 77:26:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:20:16 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	08:41:18 घं
वेलान्तर	00:02:27 घं
सूर्योदय	06:05:39 घं
सूर्यास्त	18:40:16 घं
चैत्रादि संवत	2083
शक संवत	1948
मास	वैशाख
पक्ष	कृष्ण
तिथि	5
नक्षत्र	अनुराधा
योग	व्यतिपात
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	मृग
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	नू-नूतन
पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
होरा	बुध
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

शनि 4वर्ष 10मा 17दि

शनि

06/04/2026
22/02/2031

00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
06/04/2026
राहु 11/08/2028
गुरु 22/02/2031

योगिनी

भ्रामरी 1वर्ष 0मा 10दि

भ्रामरी

06/04/2026
17/04/2027

00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
06/04/2026
संकटा 16/08/2026
मंगला 26/09/2026
पिंगला 16/12/2026
धान्या 17/04/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			11:13:10	तुला	स्वाति	2	राहु	शनि	---	0:00			
सूर्य			22:34:26	मीन	रेवती	2	बुध	चंद्र	मित्र राशि	1.22	अमात्य	पितृ	सम्पत
चंद्र			13:14:27	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	राहु	नीच राशि	1.44	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	03:16:18	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	मित्र राशि	1.13	कलत्र	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			24:58:57	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	सम राशि	1.10	आत्मा	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			21:57:54	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.19	भ्रातृ	धन	अतिमित्र
शुक्र			14:18:28	मेष	भरणी	1	शुक्र	शुक्र	सम राशि	1.29	मातृ	कलत्र	क्षेम
शनि		अ	12:01:02	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	चंद्र	सम राशि	0.94	ज्ञाति	आयु	जन्म
राहु	व		14:01:31	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		14:01:31	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

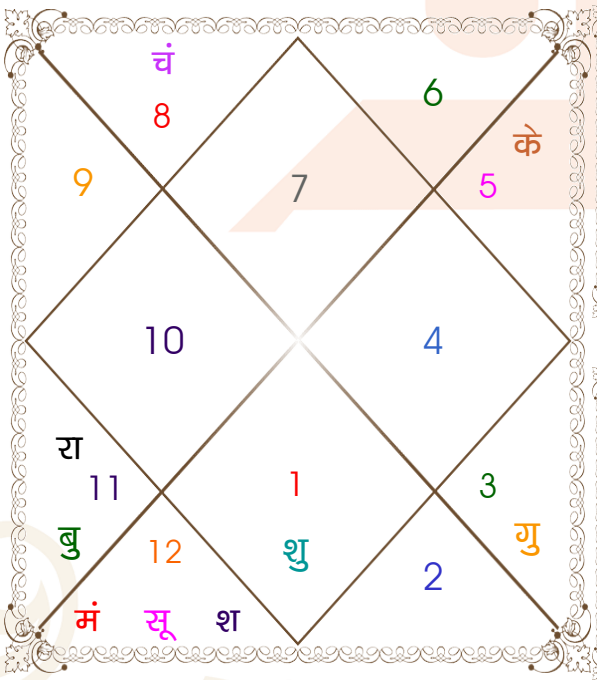

चन्द्र कुंडली

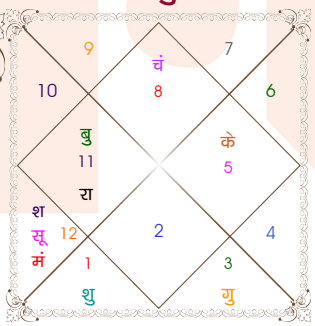

नवमांश कुंडली

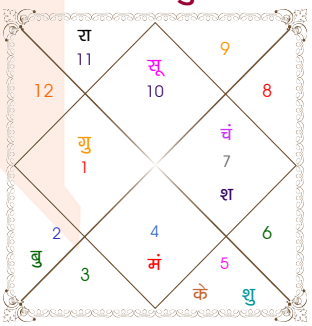

सर्वाष्टकवर्ग

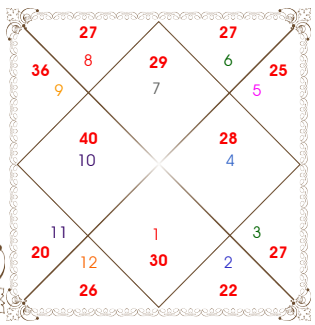

दशमांश कुंडली

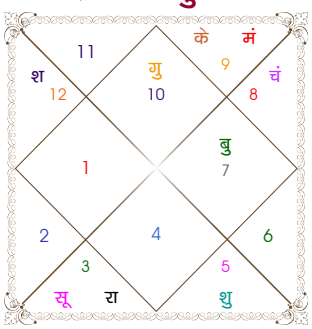

नक्षत्रफल

आप अनुराधा नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी मध्य, गण देव, वर्ग सर्प, वर्ण विप्र तथा योनि मृग होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "नु" या "नू" अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा नूतन आदि

आप एक परिश्रमी महिला होंगी तथा अपने समस्त सांसारिक कार्यकलापों तथा उद्य मों को परिश्रमपूर्वक सम्पन्न करेंगी। अपने कार्यक्षेत्र की विस्तृतता के कारण आप अधिकांश रूप से देश विदेश की यात्राओं में भी व्यस्त रहेंगी। आप अपने सम्बन्धियों तथा बन्धुवर्ग के हितकार्यों को करने में हमेशा तत्पर रहेंगी तथा यथाशक्ति उनको अपनी ओर से सहायता एवं सहयोग भी प्रदान करेंगी। इस प्रकार उनके लिए कुछ करने की भावना से आपकी आत्मिक शान्ति प्राप्त होगी तथा मन भी हमेशा प्रसन्नता से परिपूर्ण रहेगा।

पुरूषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यतः।
अनुराधोद्भवो लोके जायते हृष्टमानसः।।
जातक दीपिका

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक पुरूषार्थी, प्रवासी, बन्धुओं के कार्य को करने में तत्पर तथा हमेशा प्रसन्नचित रहता है।

आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आप एक धनाढ्य महिला होंगी तथा आजीवन धन से सुसम्पन्न रहेंगी। इसका आपके जीवन में अभाव नहीं रहेगा। आपके पास भौतिक सुखसंसाधनों की भी कमी नहीं रहेगी तथा आजीवन आप इनके उपभोग में लिप्त रहेंगी। समाज में आपकी पूर्ण प्रसिद्धि रहेगी तथा सभी लोग आपको उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही लोग आपको पूजनीया भी समझेंगे। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धनवैभव से आप सुसम्पन्न रहकर एक सामर्थ्यशाली महिला होंगी।

मैत्रे सुप्रियवाग्धनी सुखरतः पूज्यो यशस्वी विभुः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक प्रिय तथा सुन्दर वाणी बोलने वाला, धनवान, सु खसंसाधनों में लिप्त रहने वाला, पूज्य, यशस्वी तथा सामर्थ्यवान व्यक्ति होता है।

आप विपुल धन की भी स्वामिनी रहेंगी तथा आपका अधिकांश समय विदेश में रहकर व्यतीत होगा। यदा कदा अपने सांसारिक कार्यों में व्यस्तता के कारण या अन्य लौकिक कारणों से आप भोजन प्राप्त न करने के कारण भूख से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगी। इसके साथ ही आपकी प्रकृति भ्रमणप्रिय होगी तथा इधर उधर घूमना या पिकनिक आदि कार्यक्रमों का आयोजन करना आपको रुचिकर लगेगा।

आढ्यो विदेशवासी क्षुधालुरटनोडनुराधासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, विदेश में वास करने वाला, भूख से व्याकुल रहने वाला तथा भ्रमण प्रिय होता है।

आपके शरीर तथा मुखमंडल की आभा हमेशा दर्शनीय रहेगी। आप एक उत्सव प्रिय महिला होंगी तथा समय समय पर पार्टी आदि का आयोजन करती रहेंगी एवं अपनी उत्सव प्रियता का प्रदर्शन करेंगी। शत्रुओं को परास्त करने में आप सर्वथा सक्षम रहेंगी तथा आपके शत्रु आपसे अत्यधिक मात्रा में भयभीत रहेंगे। आप विभिन्न प्रकार की कलाओं में भी निपुण रहेंगी तथा सम्पूर्ण जीवन में विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर जीवन व्यतीत करेंगी।

सत्कान्तिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेतारिपूणां च कला प्रवीणः।
स्यात्संभवे यस्य किलानुराधा समृद्धिशाला विविधा च तस्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आप रजत पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः जीवन में आप धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी तथा कभी भी इसके अभाव की अनुभूति नहीं करेंगी। साथ ही जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को आप अर्जित करेंगी एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा दानशीलता के भाव से नित्य युक्त रहेंगी। साथ ही आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपको अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में शीघ्र ही इच्छित सफलता प्राप्त होगी। शरीर से आप अत्यन्त ही कान्ति युक्त रहेंगी तथा आपकी मुखाकृति भी सुन्दर एवं दर्शनीय रहेगी। समाज में आप आदरणीय तथा श्रद्धेय महिला समझी जाएंगी। आप का परिवार भी विस्तृत रहेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। विद्याध्ययन के क्षेत्र में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा एक विदुषी के रूप में ख्याति अर्जित करने में सफल होंगी। इसके अतिरिक्त आप प्रायः अल्प मात्रा में बोलना ही पसन्द करेंगी।

वृश्चिक राशि में पैदा होने के कारण आपका वक्षस्थल विस्तृत होगा तथा आखें सुन्दर एवं बड़ी बड़ी होंगी। साथ ही शारीरिक वर्ण तनिक श्यामलता से युक्त रहेगा। आप के हाथ या पैर में मछली का निशान भी अंकित हो सकता है। आपकी समस्त हस्त रेखाएं वज्र या पक्षी के आकार की होंगी। आप माता पिता तथा गुरूजनों से भी सहयोग प्राप्त करेंगी तथा इनसे आपके घनिष्ठ संबंध रहेंगे। शैशवास्था में आप काफी बीमार रहेंगी। परन्तु आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र होगी तथा अपनी बौद्धिक चतुरता से किसी उच्चपद पर आसीन हो सकेगी। आपको कठोर एवं क्रूर कार्यों को करना रूचिकर लगेगा। अतः आप सेना, पुलिस तथा सर्जरी

आदि विभागों में कार्यरत हो सकती हैं। आपके स्वभाव में भी क्रूरता का भाव भी रहेगा। अतः अन्य जन आपसे असन्तुष्ट रहेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका पेट तथा मस्तक भी दीर्घाकार रहेगा। साथ ही आप अन्य लोगों की वस्तुओं को देखकर उनके प्रति अपना लोलुपता के भाव का प्रदर्शन करेंगी। आपके शरीर में कोमलता भी विद्यमान रहेगी तथा ईश्वर तथा धर्म के प्रति आपके मन में कोई श्रद्धा रहेगी। आपकी ठोडी तथा नाखून भी आघात आदि चिन्हों से युक्त रहेंगे। धन वैभव एवं ऐश्वर्य का आप के पास सम्पूर्ण जीवन काल में अभाव नहीं रहेगा। अतः प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। आप विविध प्रकार के कार्यों को करने में भी प्रवीण होंगी तथा प्रायः कोई न कोई कार्य करती रहेंगी। आप को बन्धुवर्ग से सहयोग में प्राप्त होता रहेगा। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा समाज में अन्य लोगों पर अपना प्रभाव स्थापित करने में पूर्ण रूप से स्थापित करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपका स्वभाव उग्रता से भी युक्त रहेगा एवं समाज में अन्य जनों से भी आपके औपचारिक संबंध स्थापित रहेंगे। साथ ही सरकार या राज्य के द्वारा आपको आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ेगा।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रुगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप अपने जीवन में विपुल धन की स्वामिनी रहेंगी तथा अपने परिवार के अतिरिक्त अन्य बहुत से लोगों को भी सुख प्रदान करेंगी। पुरूषों के विषय में आप अत्यन्त ही सौभाग्यशाली रहेंगी तथा इनसे आपको पूर्ण मान सम्मान सहयोग तथा लाभ प्राप्त होता रहेगा। राज्य की सेवा में भी आप तत्पर रहेंगी। परन्तु आपके मन में दूसरे लोगों के धन को प्राप्त करने की इच्छा हमेशा जागृत रहेगी एवं इसके लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। आप अत्यन्त ही दृढ़प्रतिज्ञ महिला होंगी तथा एक बार जिस कार्य को प्रारम्भ कर लेंगी उसे पूर्ण करके ही छोड़ेंगी। आप एक साहसी तथा निर्भय महिला होंगी तथा झगड़े या विवादादि में सर्वदा विजयी रहेंगी।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

अपने जीवन काल में आप यदा कदा मनोरंजन या अन्य किसी उददेश्य से जुआ आदि खेलने की भी इच्छा करेंगी परन्तु इसमें आपको अधिक रूप से आर्थिक हानि होगी। साथ ही तेजस्वभाव होने के कारण आप कलह प्रिय भी होंगी तथा अन्य जनों से परस्पर आपका कलह चलता रहेगा। आप हृदय से दुर्बल मन से प्रायः अशान्त रहेंगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बचपन से ही भ्रमण प्रिय रहेंगी तथा घर से बाहर भी रहेंगी। आपकी आखें हल्के पीले रंग की होंगी तथा स्वभाव भी अभिमानी रहेगा। इसका आप समय समय पर समाज में प्रदर्शन भी करती रहेंगी। अपने बन्धु तथा संबंधियों के प्रति आपके मन में प्रेमभाव रहेगा। साथ ही आप एक साहसी महिला होंगी तथा साहसपूर्वक धनार्जन करने में पूर्ण रूपेण सफल रहेंगी।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

देवगण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी प्रिय तथा श्रेष्ठ होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आपकी बुद्धि सरल होगी। आप सुगमता पूर्वक अपने विचारों को अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगी तथा अन्य जनों के विचारों को भी सुगमतापूर्वक ही ग्रहण करने की क्षमता रखेंगी। आपको अल्प मात्रा में शुद्ध तथा सात्विक भोजन करना अत्यन्त ही रूचिकर लगेगा। आप अन्य लोगों के गुणों की ज्ञाता होंगी तथा स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा प्रतिपादित उत्तम एवं सद्गुणों से सुशोभित रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप अपने जीवन काल में समस्त धनैश्वर्य एवं वैभव का सुखपूर्वक उपभोग करने में सफलता प्राप्त करेंगी।

आपका स्वरूप देखने में सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा। साथ ही आपकी प्रवृति दानशीलता की रहेगी जिसका आप यथाशक्ति जीवन में पालन करेंगी। आप बुद्धिमती होंगी तथा हमेशा सादगीपसन्द रहेंगी साथ ही समाज में एक श्रेष्ठ विदुषी के रूप में आप सम्माननीया तथा प्रसिद्ध रहेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा

वैभवशाली होता है।

मृग योनि में पैदा होने के कारण आपकी प्रवृति अत्यन्त ही स्वच्छन्द प्रिय रहेगी तथा अपने सभी कार्यों को आप बिना किसी हस्तक्षेप आदि के करना पसन्द करेंगी। आप शान्त प्रवृति की होंगी तथा उग्रता का आप में अभाव रहेगा। आपकी आजीविका भी सुन्दर कार्य या साधन द्वारा सम्पन्न होंगी। सत्य एवं धर्म का अनुपालन करने में आप सर्वथा तत्पर रहेंगी। आप अपने संबंधियों तथा बन्धुवर्ग के प्रति अत्यन्त ही स्नेहशील रहेंगी तथा इनके हितकार्यों को करने में आप अपने आपको गौरवान्वित समझेंगी। इसके अतिरिक्त आप साहसी तथा निर्भीक महिला होंगी तथा समाज में अपना पूर्ण प्रभाव स्थापित रखेंगी।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्या ध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय

रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए आश्विन मास, रेवती नक्षत्र, षष्ठी, प्रतिपदा, एकादशी तिथियां, व्यतिपात योग, गरकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र व्यतिपात योग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा धनुराशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अनुकूल नहीं चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान हो रहे हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव शिवजी की उपासना करनी चाहिए तथा नित्य प्रातः शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए। साथ ही सोमवार एवं वृहस्पतिवार के उपवास भी रखने चाहिए। सोना, मूंगा, रक्त वस्त्र, रक्तचन्दन, गेहूं, तांबा, मल्का इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 7000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपके समस्त अनिष्ट फल दूर होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।